जरूरी है शिक्षा में नैतिक मूल्य : प्रो. वर्मा

लाडनूँ 28 सितम्बर। 'शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनाना ही नहीं अपितु जीवन दर्शन कराना भी है। शिक्षा पद्धति में जीवन दर्शन एवं जीविकोपार्जन दोनों का समावेश होना आवश्यक है। नैतिकता का पाठ्यक्रम इस कमी को पूरा कर सकता है। नैतिक विकास यदि नहीं हुआ तो भौतिक विकास निरर्थक है। इस दिशा में जीवन विज्ञान के प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय हैं। इसी प्रकार के सघन प्रयासों से हमारी भावी पीढ़ी को भटकाव से रोका जा सकता है। उपरोक्त विचार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री पी.एस. वर्मा ने अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के तृतीय दिन प्रेरणा दिवस के उपलक्ष्य में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन विश्वधर्म का प्रतीक है। इसके दर्शन को समझकर व्यक्ति अपने जीवन के साथ–साथ समाज और राष्ट्र का विकास भी कर सकता है। उन्होंने उपस्थित शिक्षक समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षक अपने पेशे को जीविकोपार्जन का माध्यम ही नहीं बल्कि मिशन के रूप में लें, तभी नैतिक चेतना का विकास जन–जन में हो सकेगा। इस अवसर पर प्रो वर्मा ने शिक्षा में जीवन विज्ञान लागू करने के प्रयास का आश्वासन दिया। कार्यक्रम पश्चात श्री वर्मा ने जैन विश्व भारती परिसर एवं नवनिर्मित जीवन विज्ञान भवन का अवलोकन किया तथा आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन कर विचार विमर्श किया साथ ही जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. चारित्रप्रज्ञाजी से भेंट कर विश्वविद्यालय की जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम में प्रेक्षा प्राध्यापक 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलाल ने कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोगों से व्यक्तित्व का रूपान्तरण संभव है। उन्होंने कहा कि केवल प्रयोग से ही स्वभाव परिवर्तित होकर जीवन समाजोपयोगी बनता है। मुनिश्री अशोककुमार, मुनिश्री रजनीश कुमार, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के उप–निदेशक (परीक्षा) शिवशंकर गोयल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। मौलाना आजाद माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं ने मंगल संगान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंत्री–मुनि मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूँ) ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में मंजिल का निर्धारण करना चाहिए। लक्ष्य के निर्धारण से व्यक्ति गंतव्य की ओर गति कर सकता है। मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति में नकारने की क्षमता न होना भी एक कमजोरी है। नकारने की क्षमता वाला व्यक्ति ही स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जी सकता है। सबकुछ ग्रहण करने के लिये ही नहीं अपितु कुछ त्याग के लिये भी होता है। उपयोगी बात को ग्रहण कर अनुपयोगी को छोड़ना ही समझदारी है। जीवन में व्रत के महत्व को प्रतिपादित करते हुए मुनिश्री ने संयम को सफलता का जनक बताया।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया। बजरंग जैन ने साहित्य एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती अध्यक्ष ताराचन्द रामपुरिया, मंत्री बंशीलाल बैद, जीवनमल मालू, निदेशक राजेन्द्र खटेड़, मांगीलाल जैन (अजमेर), अलीअकबर रिजवी, विरेन्द्र भाटी, ओमप्रकाश सारस्वत, हनुमानमल शर्मा, राजू खाँ, बहादुर खाँ सहित समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

प्रेषक –
हनुमान मल शर्मा
जीवन विज्ञान अकादमी,
केन्द्रीय कार्यालय,
जैन विश्व भारती, लाडनूँ